

## अच्छा नहीं लगता!

जिधर जाते हैं सब, जाना उधर अच्छा नहीं लगता  
मुझे पामाल रस्तों का सफ़र अच्छा नहीं लगता

ग़लत बातों की ख़ामोशी से सुनना, हामी भर लेना  
बहुत है फ़ायदे इसमें मगर अच्छा नहीं लगता

मुझे दुश्मन से भी ख़ुददारी की उम्मीद रहती है  
किसी का भी हो सर, क़दमों में सर अच्छा नहीं लगता

बुलन्दी पर इन्हें मिट्टी की ख़ुशबू तक नहीं आती  
ये वो शाख़े हैं जिनको अब शज़र अच्छा नहीं लगता

ये क्यों बाकी रहे आतिश-ज़नो, ये भी जला डालो  
कि सब बेघर हो और मेरा हो घर, अच्छा नहीं लगता

## कभी-कभी!

कभी-कभी मैं ये सोचता हूँ कि मुझको तेरी तलाश क्यों है  
कि जब है सारे ही तार टूटे तो साज़ में इरतेआश क्यों है

कोई अगर पूछता ये हमसे, बताते हम गर तो क्या बताते  
भला हो सब का कि ये न पूछा कि दिल पे ऐसी ख़राश क्यों है

उठाके हाथों से तुमने छोड़ा, चलो न दानिस्ता तुमने तोड़ा  
अब उल्टा हमसे तो ये न पूछो कि शीशा ये पाश-पाश क्यों है

अजब दौराहे पे ज़िन्दगी है, कभी हवस दिल को खींचती है  
कभी ये शर्मिन्दगी है दिल में कि इतनी फ़िक्रें-मआश क्यों है

न फ़िक्र कोई न जुस्तजू है, न ख़्वाब कोई न आरजू है  
ये शख्स तो कब का मर चुका है, तो बेक़फ़न फिर ये लाश क्यों है

देखिए!

कल जहा दीवार थी, है आज इक दर देखिए  
क्या समाई थी भला दीवाने के सर, देखिए

पुर-सुकू लगती है कितनी झील के पानी पे बत  
पैरो की बेताबिया पानी के अन्दर देखिए

छोडकर जिसको गए थे आप कोई और था  
अब मैं कोई और हू वापस तो आकर देखिए

छोटे-से घर मे थे देखे ख्वाब महलो के कभी  
और अब महलो मे है तो ख्वाब मे घर देखिए

जह्ने-इन्सानी इधर, आफ़ाक़ की वुसअत उधर  
एक मन्ज़र है यहा अन्दर कि बाहर देखिए

अक़ल ये कहती है दुनिया मिलती है बाज़ार मे  
दिल मगर ये कहता है कुछ और बेहतर देखिए

इन सराबो पे कोई उम्र गुज़ारे कैसे!

हमने ढूँढे भी तो ढूँढे हैं सहारे कैसे  
इन सराबो पे कोई उम्र गुज़ारे कैसे

हाथ को हाथ नहीं सूझे, वो तारीकी थी  
आ गए हाथ में क्या जाने सितारे कैसे

हर तरफ़ शोर उसी नाम का है दुनिया में  
कोई उसको जो पुकारे तो पुकारे कैसे

दिल बुझा जितने थे अरमान सभी खाक हुए  
राख में फिर ये चमकते हैं शरारे कैसे

न तो दम लेती है तू और न हवा थमती है  
ज़िन्दगी जुल्फ़ तिरी कोई सवारे कैसे

अब कोई गिला नहीं रहा!

यक़िन का अगर कोई भी सिलसिला नहीं रहा  
तो शुक्र कीजिए, कि अब कोई गिला नहीं रहा

न हिज़्र है न वस्ल है अब इसको कोई क्या कहे  
कि फूल शाख़ पर तो है मगर खिला नहीं रहा

ख़ज़ाने तुमने पाए तो ग़रीब जैसे हो गए  
पलक पे अब कोई भी मोती झिलमिला नहीं रहा

बदल गई है ज़िन्दगी, बदल गए हैं लोग भी  
खुलूस का जो था कभी वो अब सिला नहीं रहा

जो दुश्मनी बख़ील से हुई तो इतनी ख़ैर है  
कि ज़हर उस के पास है मगर पिला नहीं रहा

लहू मे जज़्ब हो सका न इल्म तो ये हाल है  
कोई सवाल ज़ह्न को जो दे जिला, नहीं रहा

ये तो मिरी मन्ज़िल नहीं है!

बज़ाहिर क्या है जो हासिल नहीं है  
मगर ये तो मिरी मन्ज़िल नहीं है

ये तोदा रेत का है, बीच दरिया  
ये बह जाएगा ये साहिल नहीं है

बहुत आसान है पहचान इसकी  
अगर दुखता नहीं तो दिल नहीं है

मुसाफ़िर वो अजब है कारवा मे  
कि वो हमराह है शामिल नहीं है

बस इक मक्तूल ही मक्तूल कब है  
बस इक कातिल ही तो कातिल नहीं है

कभी तो रात को तुम रात कह दो  
ये काम इतना भी मुश्किल नहीं है

ज़रा देख तो लो!

जीना मुश्किल है कि आसान ज़रा देख तो लो  
लोग लगते हैं परेशान ज़रा देख तो लो

फ़िर मुक़र्रिर् कोई सरगर्म सरे-मिम्बर है  
किसके हैं क़त्ल का सामान ज़रा देख तो लो

ये नया शहर तो है ख़ूब बसाया तुमने  
क्यों पुराना हुआ है वीरान ज़रा देख तो लो

इन चरागो के तले ऐसे अन्धेरे क्यों हैं  
तुम भी रह जाओगे हैरान ज़रा देख तो लो

तुम ये कहते हो कि मैं ग़ैर हूँ फिर भी शायद  
निकल आए कोई पहचान ज़रा देख तो लो

ये सताइश की तमन्ना ये सिले की परवाह  
कहा लाए हैं ये अरमान ज़रा देख तो लो

इसकी हमको सज़ा तो मिलनी थी!

सच तो ये है कुसूर अपना है  
चान्द को छूने की तमन्ना की  
आसमा को ज़मीन पर मान्ना  
फूल चाहा कि पत्थरो पे खिले  
काटो मे की तलाश खुशबू की  
आग से मान्गते रहे ठन्डक  
ख्वाब जो देखा  
चाहा सच हो जाए  
इसकी हमको सज़ा तो मिलनी थी



ये खयाल दिल से निकाल दे!

तू किसी पे जा को निसार कर दे कि दिल को कदमों में डाल दे  
कोई होगा तेरा यहाँ कभी ये खयाल दिल से निकाल दे

मिरे हुक्मरा भी अजीब है कि जवाब लेके वो आए है  
मुझे हुक्म है कि जवाब का हमें सीधा-सीधा सवाल दे

रगों-पै में जम गया सर्द खून मैं चल सकूँ न मैं हिल सकूँ  
मिरे गम की धूप को तेज़ कर, मिरे खून को तू उबाल दे

वो जो मुस्कुरा के मिला कभी तो ये फ़िक्र जैसे मुझे हुई  
कहूँ अपने दिल का जो मुद्दा, कहीं मुस्कुरा के न टाल दे

ये जो जहाँ दिन की है रौशनी तो ये दिल है रात में चान्दनी  
मुझे ख़्वाब उतने ही चाहिए ये ज़माना जितने खयाल दे

ज़्यादा फ़र्क नहीं झुकने-टूट जाने में!

मिसाल इसकी कहा कोई ज़माने में  
कि सारे खोने के ग़म पाए हमने पाने में

वो शक्ल पिघली तो हर शय में ढल गई जैसे  
अजीब बात हुई है उसे भुलाने में

वो मुतज़िर न मिला वो तो हम है शर्मिन्दा  
कि हमने देर लगा दी पलटके आने में

लतीफ़ था वो तख़य्युल से, ख़्वाब से नाज़ुक  
गवा दिया उसे हमने ही आज़माने में

समझ लिया था कभी इक साराब को दरिया  
पर इक सुकून था हमको फ़रेब खाने में

झुका दरख़्त हवा से, तो आन्धियो ने कहा  
ज़्यादा फ़र्क नहीं झुकने-टूट जाने में

ज़िन्दगी की शराब मानाते हो!

यही हालात इब्लेदा से रहे  
लोग हमसे खफ़ा-ख़फ़ा से रहे

इन चरागो में तेल ही कम था  
क्यों गिला हमको फिर हवा से रहे

बहस, शतरन्ज, शेर, मौसीकी  
तुम नहीं थे तो ये दिलासे रहे

ज़िन्दगी की शराब मानाते हो  
हमको देखो, कि पीके प्यासे रहे

उसके बन्दो को देखकर कहिए  
हमको उम्मीद क्या खुदा से रहे

कहा पे लाई है तुमको ये ज़िन्दगी देखो!

जब आइना कोई देखो इक अजनबी देखो  
कहा पे लाई है तुमको ये ज़िन्दगी देखो

मुहब्बतो मे कहा अपने वास्ते फुर्सत  
जिसे भी चाहो वो चाहे मिरी खुशी देखो

जो हो सके तो ज़्यादा ही चाहना मुझको  
कभी जो मेरी मुहब्बत मे कुछ कमी देखो

जो दूर जाए तो ग़म है जो पास आए तो दर्द  
न जाने क्या है वो कमबख्त आदमी देखो

उजाला तो नहीं कह सकते इसको हम लेकिन  
ज़रा-सी कम तो हुई है ये तीरगी देखो

## सारी अदा उसकी है!

सारी हैरत है मिरी सारी अदा उसकी है  
बेगुनाही है मिरी और सज़ा उसकी है

मेरे अल्फ़ाज़ में जो रन्ग है वो उसका है  
मेरे अहसास में जो है वो फ़िज़ा उसकी है

शेर मेरे हैं मगर उनमें मुहब्बत उसकी  
फूल मेरे हैं मगर बादे-सबा उसकी है

इक मुहब्बत की ये तस्वीर है दो रन्गों में  
शौक सब मेरा है और सारी हया उसकी है

हमने क्या उससे मुहब्बत की इज़ाज़त ली थी  
दिल-शिकन ही सही, पर बात बजा उसकी है

एक मेरे ही सिवा सबको पुकारे है कोई  
मैंने पहले ही कहा था ये सदा उसकी है

खून से सीची है मैंने जो ज़मी मर-मर के  
वो ज़मी, एक सितमगर से कहा, उसकी है

वो आदमी अब कही नहीं है!

निगल गए सब के सब समुन्दर, ज़मी बची अब कही नहीं है  
बचाते हम अपनी जान जिसमे वो कश्ती अब कही नहीं है

बहुत दिनो बाद पाई फुर्सत तो मैंने खुद को पलटके देखा  
मगर मैं पहचानता था जिसको वो आदमी अब कही नहीं है

गुज़र गया वक़्त दिल पे लिखकर न जाने कैसी अजीब बाते  
वरक़ पलटता हू मैं जो दिल के तो सादगी अब कही नहीं है

वो आग बरसी है दोपहर मे कि सारे मन्ज़र झुलस गए है  
यहा सवेरे जो ताज़गी थी वो ताज़गी अब कही नहीं है

तुम अपने कस्बो मे जाके देखो वहा भी अब शहर ही बसे है  
कि ढून्ढते हो जो जिन्दगी तुम वो जिन्दगी अब कही नहीं है

दर्द अपनाता है पराए कौन!

दर्द अपनाता है पराए कौन  
कौन सुनता है और सुनाए कौन

कौन दोहराए फिर वही बाते  
ग़म अभी सोया है, जगाए कौन

अब सुकू है तो भुलने मे है  
लेकिन उस शख्स को भुलाए कौन

वो जो अपने है क्या वो अपने है  
कौन दुख झेले, आजमाए कौन

आज फिर दिल है कुछ उदास-उदास  
देखिए आज याद आए कौन

मैं अपनी दुनिया में जी रहा हूँ!

अजीब किस्सा है  
जब ये दुनिया समझ रही थी  
तुम अपनी दुनिया में जी रहे हो  
मैं अपनी दुनिया में जी रहा हूँ  
तो हमने सारी निगाहों से दूर  
एक दुनिया बसाई थी  
जो कि मेरी भी थी  
तुम्हारी भी थी  
जहाँ फ़िज़ाओं में  
दोनों के ख़्वाब जागते थे  
जहाँ हवाओं में  
दोनों की सरगोशियाँ घुली थी  
जहाँ के फूलों में  
दोनों की आरजू के सब रत्न  
खिल रहे थे  
जहाँ पे दोनों की ज़ुरअतों के  
हज़ार चश्मे उबल रहे थे



कभी जो हमे था खुमार जाता रहा!

खुला है दर प तिरा इन्तज़ार जाता रहा  
खुलूस तो है मगर एतेबार जाता रहा

किसी की आख मे मस्ती तो आज भी है वही  
मगर कभी जो हमे था खुमार जाता रहा

कभी जो सीने मे एक आग थी वो सर्द हुई  
कभी निगाह मे जो था शरार जाता रहा

अजब-सा चैन था हमको कि जब थे हम बेचैन  
करार आया तो जैसे करार जाता रहा

कभी तो मेरी भी सुनवाई होगी महफ़िल मे  
मैं ये उम्मीद लिए बार-बार जाता रहा

शुक्र है खैरियत से हू साहब!

शुक्र है खैरियत से हू साहब  
आप से और क्या कहू साहब

अब समझने लगा हू सूदो-ज़िया  
अब कहा मुझमे वो जुनू साहब

ज़िल्लते-ज़ीस्त या शिकस्ते-ज़मीर  
ये सहू मै कि वो सहू साहब

हम तुम्हे याद करके रो लेते  
दो घड़ी मिलता जो सुकू साहब

शाम भी ढल रही है घर भी है दूर  
कितनी देर और मै रुकू साहब

अब झुकूंगा तो टूट जाउंगा  
कैसे अब और मै झुकू साहब

कुछ रिवायत की गवाही पर  
कितना जुर्माना है भरू साहब

## बरसो की रस्मो-राह थी!

बरसो की रस्मो-राह थी इक रोज़ उसने तोड़ दी  
हुशियार हम भी कम नहीं, उम्मीद हमने छोड़ दी

गिरहे पड़ी है किस तरह, ये बात है कुछ इस तरह  
वो डोर टूटी बारहा, हर बार हमने जोड़ दी

उसने कहा कैसे हो तुम, बस मैंने लब खोले ही थे  
और बात दुनिया की तरफ़ जल्दी-से उसने मोड़ दी

वो चाहता है सब कहे, सरकार तो बेऐब है  
जो देख पाए ऐब वो हर आख उसने फ़ोड़ दी

थोड़ी-सी पाई थी खुशी तो सो गई थी जिन्दगी  
ऐ दर्द तेरा शुक्रिया, जो इस तरह झन्झोड़ दी

नही दरिया तो हो सराब कोई!

प्यास की कैसे लाए ताब कोई  
नही दरिया तो हो सराब कोई

ज़ख्म दिल में जहा महकता है  
इसी क्यारी में था गुलाब कोई

रात बजती थी दूर शहनाई  
रोया पीकर बहुत शराब कोई

दिल को घेरे हैं रोज़गार के ग़म  
रद्दी में खो गई किताब कोई

कौन-सा ज़ख्म किसने बख़्शा है  
इसका रखे कहा हिसाब कोई

फ़िर मैं सुनने लगा हूँ इस दिल की  
आनेवाला है फिर अज़ाब कोई

शब की दहलीज़ पर शफ़क़ है लहू  
फ़िर हुआ क़त्ल आप़ताब कोई

नही दरिया तो हो सराब कोई!

प्यास की कैसे लाए ताब कोई  
नही दरिया तो हो सराब कोई

ज़ख्म दिल में जहाँ महकता है  
इसी क्यारी में था गुलाब कोई

रात बजती थी दूर शहनाई  
रोया पीकर बहुत शराब कोई

दिल को घेरे हैं रोज़गार के ग़म  
रद्दी में खो गई किताब कोई

कौन-सा ज़ख्म किसने बख़्शा है  
इसका रखे कहा हिसाब कोई

फ़िर मैं सुनने लगा हूँ इस दिल की  
आनेवाला है फिर अज़ाब कोई

शब की दहलीज़ पर शफ़क़ है लहू  
फ़िर हुआ क़त्ल आप़ताब कोई

हर सितम भूलके हम आपके अब से हो जाए!

दस्तबरदार अगर आप गज़ब से हो जाए  
हर सितम भूलके हम आपके अब से हो जाए

चौदहवीं शब है तो खिड़की के गिरा दो पर्दे  
कौन जाने कि वो नाराज़ ही शब से हो जाए

एक खुशबू की तरह फैलते हैं महफ़िल में  
ऐसे अल्फ़ाज़ अदा जो तिरे लब से हो जाए

न कोई इश्क़ है बाकी न कोई परचम है  
लोग दीवाने भला किसके सबब से हो जाए

बान्ध लो हाथ कि फैले न किसी के आगे  
सी लो ये लब कि कही वा न तलब से हो जाए

बात तो छेड़ मिरे दिल, कोई किस्सा तो सुना  
क्या अजब उनके भी जज़्बात अजब से हो जाए

मिरा खुदा भी नहीं!

मैं कब से कितना हू तन्हा तुझे पता भी नहीं  
तिरा तो कोई खुदा है मिरा खुदा भी नहीं

कभी ये लगता है अब खत्म हो गया सब कुछ  
कभी ये लगता है अब तक तो कुछ हुआ भी नहीं

कभी तो बात की उसने, कभी रहा खामोश  
कभी तो हसके मिला और कभी मिला भी नहीं

कभी जो तल्लख-कलामी थी वो भी खत्म हुई  
कभी गिला था हमे उनसे अब गिला भी नहीं

वो चीख उभरी, बड़ी देर गून्जी, डूब गई  
हर एक सुनता था, लेकिन कोई हिला भी नहीं

मैं तो पत्थर को हो गया जैसे!

दिल का हर दर्द खो गया जैसे  
मैं तो पत्थर को हो गया जैसे

दाग बाकी नहीं कि नक्श कहू  
कोई दीवार धो गया जैसे

जागता जह्न गम की धूप में था  
छाव पाते ही सो गया जैसे

देखनेवाला था कल उस का तपाक  
फिर वो गैर हो गया जैसे

कुछ बिछड़ने के भी तरीके हैं  
खैर, जाने दो जो गया जैसे



हमारे हाथ मे खाली कमान बाकी है!

अभी ज़मीर मे थोड़ी-सी जान बाकी है

अभी हमारा कोई इम्तेहान बाकी है

हमारे घर को तो उजड़े हुए ज़माना हुआ

मगर सुना है अभी वो मकान बाकी है

हमारी उनसे जो थी गुफ़्तगू, वो ख़त्म हुई

मगर सुकूत-सा कुछ दरमियान बाकी है

हमारे ज़ह्न की बस्ती मे आग ऐसी लगी

कि जो थ ख़ाक हुआ इक दुकान बाकी है

वो ज़ख़्म भर गया अर्सा हुआ मगर अबतक

ज़रा-सा दर्द ज़रा-सा निशान बाकी है

ज़रा-सी बात जो फ़ैली तो दास्तान बनी

वो बात ख़त्म हुई दास्तान बाकी है

अब आया तीर चलाने का फ़न तो क्या आया

हमारे हाथ मे खाली कमान बाकी है

हम बरसो रहे हैं दरबदर क्यो!

ये मुझसे पूछते हैं चारागर क्यो  
कि तू जिन्दा तो है अब तक, मगर क्यो

जो रस्ता छोडके मैं जा रहा हू  
उसी रस्ते पे जाती है नज़र क्यो

थकन से चूर पास आया था इसके  
गिरा सोते मे मुझपर ये शजर क्यो

सुनाएन्गे कभी फुर्सत मे तुम को  
कि हम बरसो रहे हैं दरबदर क्यो

यहा भी सब है बेगाना ही मुझसे  
कहू मैं क्या कि याद आया है घर क्यो

मैं खुश रहता अगर समझा न होता  
ये दुनिया है तो मैं हू दीदावर क्यो

आज हू मगर तन्हा!

जिन्दगी की आन्धी मे जह्न का शजर तन्हा  
तुमसे कुछ सहारा था, आज हू मगर तन्हा

ज़ख्म-ख़ुर्दा लम्हो को मसलेहत सम्भाले है  
अनगिनत मरीजो मे एक चारागर तन्हा

बून्द जब थी बादल मे जिन्दगी थी हलचल मे  
क़ैद अब सदफ़ मे है बनके है गुहर तन्हा

तुम फुज़ूल बातो का दिल पे बोझ मत लेना  
हम तो ख़ैर कर लेनो जिन्दगी बसर तन्हा

इक खिलौना जोगी से खो गया था बचपन मे  
ढून्ढता फिरा उसको वो नगर-नगर तन्हा

झुटपुटे क आलम है जाने कौन आदम है  
इक लहद पे रोता है मुन्ह ढापकर तन्हा

वो ज़माना गुज़र गया कब का!

वो ज़माना गुज़र गया कब का  
था जो दिवाना मर गया कब का

ढूँढता था जो इक नई दुनिया  
लौटके अपने घर गया कब का

वो जो लाया था हमको दरिया तक  
पार अकेले उतर गया कब का

उसका जो हाल है वही जाने  
अपना तो ज़ख्म भर गया कब का

ख्वाब-दर-ख्वाब था जो शीराज़ा  
अब कहा है, बिखर गया कब का

ये दुनिया तुमको रास आए तो कहना!

ये दुनिया तुमको रास आए तो कहना  
न सर पत्थर से टकराए तो कहना

ये गुल कागज़ है, ये ज़ेवर है पीतल  
समझ से जब से आ जाए तो कहना

बहुत खुश हो कि उसने कुछ कहा है  
न कहकर वो मुकर जाए तो कहना

बहल जाओगे तुम ग़म सुनके मेरे  
कभी दिल ग़म से घबराए तो कहना

धुआ जो कुछ घरों से उठ रहा है  
न पूरे शहर पर छाए तो कहना

आज मैंने अपना फिर सौदा किया!

आज मैंने अपना फिर सौदा किया  
और फिर मैं दूर से देखा किया

जिन्दगी भर मेरे काम आए उसूल  
एक-इक करके उन्हें बेचा किया

बन्ध गयी थी दिल से कुछ उम्मीद-सी  
खैर, तुमने जो किया अच्छा किया

कुछ कमी अपनी वफ़ाओ में भी थी  
तुमसे क्या कहते कि तुमने क्या किया

क्या बताऊ कौन था जिसने मुझे  
इस भरी दुनिया में है तन्हा किया

पुरसुकू हो गई है तन्हाई!

किसलिए कीजे बज़्म-आराई  
पुरसुकू हो गई है तन्हाई

फ़िर् ख़मोशी ने साज छेडा है  
फ़िर खयालात ने ली अन्गडाई

यू सुकू-आशना हुए लम्हे  
बून्द मे जैसे आए गहराई

इक से इक वाकिआ हुआ लेकिन  
न गई तेरे ग़म की यकताई

कोई शिकवा न ग़म, न कोई याद  
बैठे-बैठे बस आख़ भर आई

ढलकी शानो से हर यक़ी की क़बा  
जिन्दगी ले रही है अन्गडाई

मुझको बहला दे!

न खुशी दे तो कुछ दिलासा दे  
दोस्त, जैसे हो मुझको बहला दे

आगही से मिली है तन्हाई  
आ मिरी जान मुझको धोखा दे

अब तो तक्मील की भी शर्त नहीं  
जिन्दगी अब तो इक तमन्ना दे

ऐ सफ़र इतना राएगा तो न जा  
न हो मन्जिल कही तो पहुँचा दे

तर्क करना है गर तअल्लुक तो  
खुद न जा तू किसी से कहला दे



हमको ही जिन्दगी से निभाने का ढब नहीं!

मैं खुद भी कब ये कहता हू कोई सबब नहीं  
तू सच है मुझको छोड़ भी दे तो अजब नहीं

वापस जो चाहो जाना तो जा सकते हो मगर  
अब इतनी दूर आ गए हम, देखो अब नहीं

ज़र का, ज़रूरतो का, ज़माने का, दोस्तो  
करते तो हम भी हैं मगर इतना अदब नहीं

मेरा खुलूस है तो हमेशा के वास्ते  
तेरा करम नहीं है कि अब है और अब नहीं

आए वो रोज़ो-शब कि जो चाहे थे रोज़ो-शब  
तो मेरे रोज़ो-शब भी मिरे रोज़ो-शब नहीं

दुनिया से क्या शिकायते, लोगो से क्या गिला  
हमको ही जिन्दगी से निभाने का ढब नहीं

वो बात पहले-सी नहीं है!

हमारे दिल में अब तलखी नहीं है  
मगर वो बात पहले-सी नहीं है

मुझे मायूस भी करती नहीं है  
यही आदत तिरी अच्छी नहीं है

बहुत-से फ़ायदे हैं मसलेहत में  
मगर दिल की तो ये मज़ी नहीं है

हर इक दास्ता सुनते हैं जैसे  
कभी हमने मुहब्बत की नहीं है

है इक दरवाज़ा बिन दीवार दुनिया  
मफ़र ग़म से यहा कोई नहीं है

## एक अधूरा अफ़साना!

याद उसे भी एक अधूरा अफ़साना तो होगा  
कल रस्ते में उसने हमको पहचाना तो होगा

डर हमको भी लगता है रस्ते के सन्नाटे से  
लेकिन एक सफ़र पर ऐ दिल, अब जाना तो होगा

कुछ बातों के मतलब हैं और कुछ मतलब की बातें  
जो ये फ़र्क समझ लेगा वो दिवाना तो होगा

दिल की बातें नहीं हैं तो दिलचस्प ही कुछ बातें हों  
जिन्दा रहना है तो दिल को बहलाना तो होगा

जीत के भी वो शर्मिन्दा हैं, हार के भी हम नाज़ा  
कम से कम वो दिल ही दिल में ये माना तो होगा

दर्द कुछ दिन तो मेहमा ठहरे!

दर्द कुछ दिन तो मेहमा ठहरे  
हम बज़िद है कि मेज़बा ठहरे

सिर्फ़ तन्हाई सिर्फ़ वीरानी  
ये नज़र जब उठे जहा ठहरे

कौन-से ज़ख्म पर पड़ाव किया  
दर्द के काफ़िले कहा ठहरे

कैसे दिल में खुशी बसा लूँ मैं  
कैसे मुट्ठी में ये धुआ ठहरे

थी कही मसलेहत कही जुरअत  
हम कही इनके दरमिया ठहरे

मेरे रास्ते मे इक मोड था!

मेरे रास्ते मे इक मोड था  
और उस मोड पर  
पेड था एक बरगद क ऊचा  
घना  
जिसके साए मे मेरा बहुत वक़्त बीता है  
लेकिन हमेशा यही मैंने सोचा  
कि रास्ते मे ये मोड ही इसलिए है  
कि ये पेड है  
उम्र की आन्धियो मे  
वो पेड एक दिन गिर गया  
मोड लेकिन है अब तक वही क वही

देखता हू तो  
आगे भी रस्ते मे  
बस मोड ही मोड है  
पेड कोई नही  
रास्तो मे मुझे यू तो मिल जाते है मेहरबा  
फिर भी हर मोड पर  
पूछता है ये दिल  
वो जो इक छाव थी  
खो गयी है कहा।

ये आए दिन के हन्गामे!

ये आए दिन के हन्गामे  
ये जब देखो सफ़र करना  
यहा जाना - वहा जाना  
इसे मिलना उसे मिलना  
हमारे सारे लम्हे  
ऐसे लगते हैं  
कि जैसे ट्रेन के चलने से पहले  
रेलवे स्टेशनो पर  
जल्दी-जल्दी अपने डब्बे ढूँढ़ते  
कोई मुसाफ़िर हो  
जिन्हें कब सास भी लेने की मुहलत है  
कभी लगता है  
तुमको मुझसे मुझको तुमसे मिलने क  
खयाल आए  
कहा इतनी भी फ़ुर्सत है

मगर जब सन्गदिल दुनिया मेरा दिल तोड़ती है तो  
कोई उम्मीद चलते-चलते  
जब मुन्ह मोड़ती है तो  
कभी कोई खुशी क फूल  
जब इस दिल में खिलता है  
कभी मुझको अपने जेह्न से  
कोई खयाल इनआम मिलता है  
कभी जब इक तमन्ना पूरी होने से  
ये दिल खाली-सा होता है  
कभी जब दर्द आके पलको पे मोती पिरोता है

तो ये अहसास होता है  
खुशी हो गम हो हैरत हो  
कोई जज़्बा हो  
इसमे जब कहीं इक मोड आए तो  
वहा पलभर को  
सारी दुनिया पीछे छूट जाती है  
वहा पलभर को  
इस कठपुतली जैसी जिन्दगी की  
डोरी-डोरी टूट जाती है  
मुझे उस मोड पर  
बस इक तुम्हारी ही जरूरत है  
मगर ये जिन्दगी की खूबसूरत हकीकत है  
कि मेरी राह मे जब ऐसा कोई मोड आया है  
तो हर उस मोड पर मैंने  
तुम्हे हमराह पाया है।

घर मे बैठे हुए क्या लिखते हो!

घर मे बैठे हुए क्या लिखते हो  
बाहर निकलो  
देखो क्या हाल है दुनिया क  
ये क्या आलम है  
सूनी आखे है  
सभी खुशियो से खाली जैसे  
आओ इन आखो मे खुशियो की चमक हम लिख दे  
चेहरो से गहरी ये मायूसी मिटाके  
आओ  
इनपे उम्मीद की इक उजली किरन हम लिख दे  
दूर तक जो हमे वीराने नजर आते है  
आओ वीरानो पर अब एक चमन हम लिख दे  
लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ समुन्दर-सा बहे  
मौज-ब-मौज  
बहे-नगमात मे  
हर कोहे-सितम हल हो जाए  
दुनिया दुनिया न रहे एक् ग़ज़ल हो जाए

---